International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 1; Issue 6; November 2016; Page No. 07-10

रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन

कल्पना मिश्रा

शोधार्थी, शिक्षा – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

बालकों में उत्पन्न होने वाले विकासात्मक परिवर्तनों के फलस्वरूप व्यक्तित्व के प्रतिमानों का भी विकास होता है। प्रतिमान का अर्थ स्वरूप या आकृति से होता है। इस प्रकार बालकों के व्यक्तित्व संरचना में पायी जाने वाली विभिन्न मनोदैहिक प्रणालियाँ परस्पर अन्तः सम्बन्धित होती हैं और एक–दूसरे को आंतरिक रूप से प्रभावित करती रहती हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व के संरूप में दो घटकों का समावेश होता है, जिन्हें क्रमशः 'स्व' की अवधारणा एवं शीलगुण के रूप में माना जाता है। प्रस्तुत शोध रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध के निष्कर्ष यह बताते है कि शोध क्षेत्र के उत्तरदाताओं का 49.67 प्रतिशत मत है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है। बच्चों के प्रकृति–प्रदत्त गुणों को मुखारित करना, उनके नैतिक गुणों को पहचानना और संवारना, उन्हें सच्चे ईमानदार और उच्च आदर्शो के प्रति निष्ठावान नागरिक बनाना शिक्षक का ध्येय है।

मूल शब्दः रीवा जिला, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, व्यक्तित्व, विकास, समीक्षात्मक, अध्ययन।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव के विकास की आवश्यकता है, जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवन देश और समाज को गतिविधियों से अधूरा रह जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रियता खोकर पिछड़ेपन का शिकार हो जाता है। अतः शिक्षा ही वह सशक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन की प्रगति करते हुए सामाजिक व आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।

बालक स्वयं के बारे में जो सोचता है तथा अपने बारे में जो अवधारणा विकसित करता है, उसे 'स्व की अवधारणा कहते है। यह दो रूपों में हो सकता है। 'वास्तविक स्व' एवं 'आदर्शत्मक स्व' 'वास्तविक स्व' का तात्पर्य है बच्चा अपने बारे में क्या सोचता है या प्रत्यक्षीकृत करता है, जैसे वह कौन है? उसमें क्या–क्या विशेषताएँ हैं? आदि। 'आदशात्मक स्व' का आशय वह कैसा होना चाहता है' तथा 'आगे चलकर कैसा बनना चाहता है, इस प्रकार 'स्व' के दोनों रूपों में से प्रत्येक का सम्बन्ध शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक पहलू से होता है। शारीरिक दृष्टिकोण में शारीरिक अनुभव एवं शारीरिक क्षमता तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में बुद्धि, कौशल एवं अन्य लोगों के साथ मानसिक क्षमताओं का प्रदर्शन आदि से स्व सम्बन्धित होता है।

हर बालक अनगढ़ पत्थर की तरह है जिसमें सुन्दर मूर्ति छिपी है, जिसे शिल्पी की आँख देख पाती है। वह उसे तराश कर सुन्दर मूर्ति में बदल सकता है। क्योंकि मूर्ति पहले से ही पत्थर में मौजूद होती है शिल्पी तो बस उस फालतू पत्थर को जिसमें मूर्ति ढकी होती है, एक तरफ कर देता है और सुन्दर मूर्ति प्रकट हो जाती है। माता–पिता शिक्षक और समाज बालक को इसी प्रकार संवार कर खूबसूरत व्यक्तित्व प्रदान करते हैं।

व्यक्तित्व – विकास में वंशानुक्रम तथा परिवेश दो प्रधान तत्व हैं। वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियाँ प्रदान करता है। परिवेश उसे इन शक्तियों को सिद्धि के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है। बालक के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है। ज्यों–ज्यों बालक बिकसित होता जाता है, वह उस समाज या समुदाय की शैली को आत्मसात् कर लेता है, जिसमें वह बड़ा होता है, व्यक्तित्व पर गहरी छाप छोड़ते हैं।

व्यक्तित्व की संरचना अनेक शीलगुणों से मिलकर बनी होती है। यद्यपि इनका विकास अधिगम एवं अनुभूतियों पर निर्भर होता है। शीलगुण से तात्पर्य व्यवहार की विशेषता या समायोजन के प्रतिमान से है। जैसे संवेगात्मक स्थिरता, आक्रामकता, दयालुता, सहिष्णुता, विश्वसनीय आदि गुण विशिष्टि होता है, कुछ समान होते है तथा एक दूसरे से सम्बन्धित होते है। शीलगुण संलक्षण निर्मित होता है। जैसे शांत, एकान्तप्रिय, संकोची एवं दब्बू होने पर व्यक्ति को अन्तर्मुखी कहा जाता है। इसी प्रकार अनेक संलक्षणों की रचना हो सकती है। किसी व्यक्ति में जिन गुणों में प्रभुत्व एवं स्थायित्व की स्थिति पायी जाती है, उन्हें ही व्यक्तित्व का शीलगुण समझना चाहिए। शीलगुणों में भिन्नता के परिणामस्वरूप हम बालकों के व्यक्तित्व को भिन्न–भिन्न रूपों में प्रत्यक्षित करते हैं। इस प्रकार सभी बालकों के व्यवहार में अलग–अलग शीलगुणों का स्थायित्व प्रदर्शित होता है।

व्यक्तित्व संरूपों के स्थायी संगठन में 'स्व' की भूमिका प्रमुख होती है। यदि 'स्व' की वस्तुस्थिति में परिवर्तन होता है तो प्रतिमानों का स्वरूप भी परिवर्तित होता है। यदि स्वयं के बारे में बच्चे द्वन्द्व का अनुभव करते हैं तो संरूप के संगठन में स्थायित्व नहीं आ पाता।

जैसे – माता–पिता बच्चे को अच्छा कहते हैं परन्तु मित्रमंडली अस्वीकार करती है। इस प्रकार 'वास्तविक स्व' एवं आदर्शात्मक स्व' में अधिक विसंगति होती है। कैटेल एवं ड्रिगल (1974) के अनुसार यदि बालक स्वयं को सुयोग्य समझता है तो उसका समायोजन यथोचित ढंग से होता है, परन्तु उसके मन में निषेधात्मक भावनाएँ उत्पन्न होने उसमें व्यक्तिगत तथा सामाजिक समायोजन की

समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं।
सामाजिक न्याय तथा समानता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि वंचित एवं सम्पन्न वर्गों के बीच खाई को शीघ्रातिशीघ्र कम कर दिया जाये। शिक्षा इस कार्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सामाजिक न्याय तथा समानता की दृष्टि से भी यह अत्यन्त आवश्यक है कि शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता एवं उसके वास्तविक उपभोग में दृष्टिगोचर होने वाली असमानता को दूर करके सभी क्षेत्रों (ग्रामीण एवं शहरी) के छात्रों को शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर उपलब्ध कराये जायें।
शिक्षा जैसी अनमोल वस्तु को विद्यार्थियों तक पहुँचानें में शिक्षक एक सेतु की भूमिका निभाते है। भारत में शिक्षा को प्राथमिकता पर रखते हुए उसके प्रसार के लिए शासन द्वारा कई योजनाऐं विद्यायालीन पर संचालित की जा रही है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान में शाला स्तर पर मध्याह्न भोजन पकाने का कार्य स्वसहायता समूह द्वारा संपन्न किया जा रहा है। विद्यालयों में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम सुचारू रूप से चले, यह शिक्षकगणों का महती उत्तरदायित्व है। अतः मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के निरंतरता के प्रति व उसमें स्व सहायता समूह के कार्य निष्पादन पर शिक्षकगणों के दृष्टिकोण को समझने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता को महसूस किया गया ताकि मध्याह्न भोजन कार्यक्रम से वांछित परिणाम प्राप्त हो सकें।

3. परिकल्पना

शोध क्षेत्र के विद्यालयों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है।

4. उद्देश्य

- विद्यार्थियों के विषय ज्ञान को बदलने में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन।
- शारीरिक, मानसिक विकास के लिये शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयासों का अध्ययन।
- विद्यार्थियों को शिक्षा और समाज के प्रति जागरुक बनाने में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन रीवा जिले के 09 विकासखंडों में से 6 विकासखण्डों का चयन कर चयनित विकासखण्डो में से उनके अन्तर्गत आने वाले प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में से 3 शिक्षक, 1 अभिभावक एवं 1 छात्र अर्थात प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से 5 उत्तरदाताओं का चयन कर प्रत्येक विकासखण्ड से 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। इस प्रकार 6 विकासखण्ड से 300 उत्तरदाताओं का जिले से चयन किया गया है। शोध अध्ययन हेतु उत्तरदाताओं का इस प्रकार से चयन किया गया है कि जिले के सभी विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालय अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा इनमें शहरी और ग्रामीण अनुपात भी यथानुसार रखा गया है।

6. अध्ययन विधि : प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है–

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, "t" Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।
- **प्रश्नावली निर्माण :** प्रश्नावली का सामाजिक अनुसंधान में विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र में फैले हुए सूचनादाताओं से आंकड़े संकलन करने में महत्वपूर्ण स्थान है। यह आंकड़े संकलन करने की एक ऐसी प्रविधि है, जिसमें कम समय में अनेक सूचनादाताओं जो कि विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए होते हैं, से सूचना एकत्रित की जा सकती है। प्रश्नावली प्रश्नों की सूची होती है जिनका उत्तर स्वयं सूचनादाता भरता है। अतः इसका प्रयोग उन्हीं परिस्थितियों में किया जा सकता है जिसमें सूचनादाता शिक्षित हो।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से आर्येन्दु, अखिलेश (2001)[1], अग्रवाल, रीना (2007)[2], चौबे, एस.पी. (2003)[3], झा, शीतला एवं दुबे शैलजा (2016)[4], सिंह, शिव प्रकाश (2007)[5] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[6] ने शोध विधि एवं विज्ञान विषय से सम्बन्धित कार्य किये है, जिनमें से निष्कर्ष निम्नानुसार है– शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया की अनेक महत्वपूर्ण बातें शिक्षार्थी जीवन में इस प्रक्रिया की उपयोगिता सिद्ध करती हैं। विभिन्न कौशल के साथ शिक्षक की विद्यार्थी के व्यवहार और सीखने के अनुभव के साथ समग्र विकास में किस तरह भूमिका होती है – इसकी संक्षिप्त जानकारी यह भाग देती है।[7]

9. शोध क्षेत्र का परिचय

मध्यप्रदेश का रीवा जिला 24°18′ से 25° उत्तरी अक्षांश तथा 81°12′ से 82°8′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का क्षेत्रफल 6314 वर्ग किलोमीटर है। रीवा जिला समुद्र से 380 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। रीवा जिले के उत्तर में उत्तरप्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व में उत्तरप्रदेश का मिर्जापुर जिला, दक्षिण में मध्यप्रदेश का सीधी जिला तथा पश्चिम में मध्यप्रदेश का सतना जिला स्थित है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

तालिका 1: विद्यालय में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन का अध्ययन।

क्र.	विकासखण्ड	न्यादर्श में चयनित उत्तरदाताओं की संख्या	विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का प्रभाव					
			होता है		नही होता है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	रीवा	50	30	60.00	17	34.00	3	6.00
2.	गंगेव	50	25	50.00	13	26.00	12	24.00
3.	सिरमौर	50	26	52.00	16	32.00	8	16.00
4.	त्योंथर	50	25	50.00	14	28.00	11	22.00
5.	मऊगंज	50	20	40.00	17	34.00	13	26.00
6.	हनुमना	50	23	46.00	20	40.00	7	14.00
योग		300	149	49.67	97	32.33	54	18.00

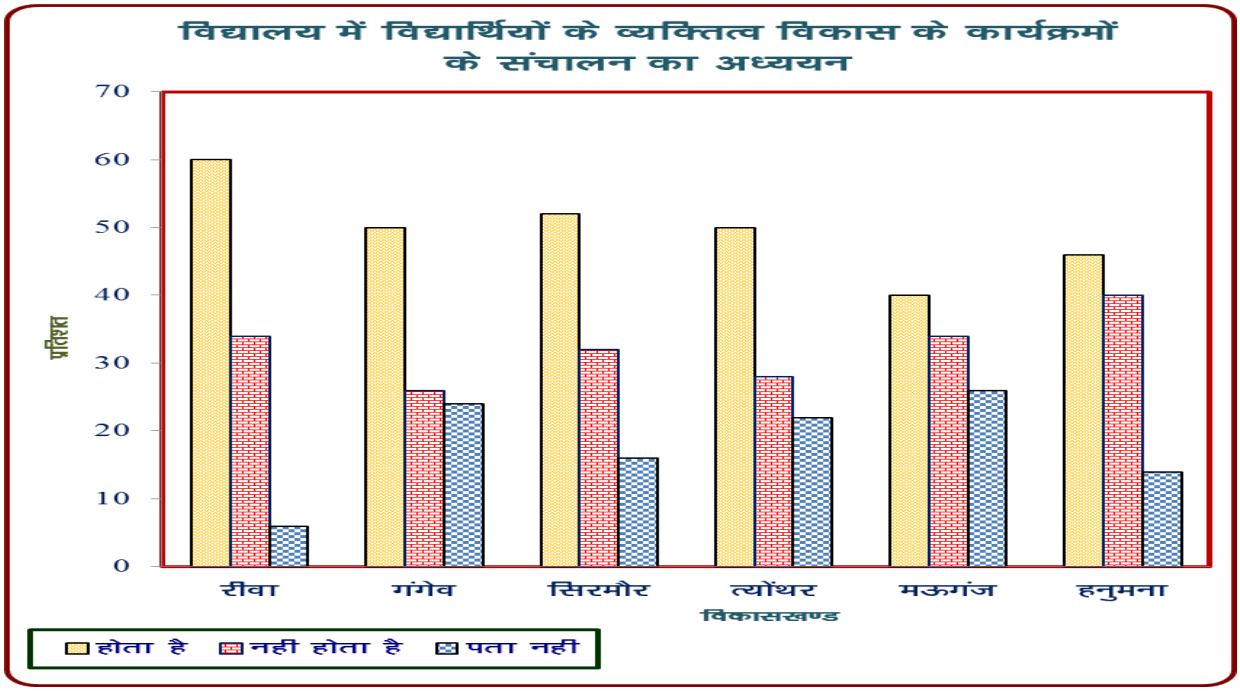

आकृति 1

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित उत्तरदाताओं से प्रश्नावली पत्रक के माध्यम से शोध क्षेत्र में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास से संबंधित तथ्यों का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में चयनित 300 उत्तरदाताओं में से 49०67 प्रतिशत मत है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है। इसी प्रकार 32०33 प्रतिशत का मत है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास नही होता है, जबकि 18०00 प्रतिशत मत है कि इस संबंध में पता नही है।

तालिका 2: सांख्यिकीय विश्लेषण कई वर्ग की गणना

आवृत्ति	विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का प्रभाव		
	होता है	नही होता है	पता नही
F_o	49.67	32.33	18
F_e	33.33	33.33	33.33
F_o-F_e	16.34	-1.00	-15.33
$(F_o-F_e)^2$	266.89	1.01	235.11
$\frac{(F_o-F_e)^2}{F_e}$	8.01	0.03	7.05

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$$x^2 = 15.09$$

1.1 विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा x^2 का मान 15.09 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

वास्तव में अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान किया जाता है। अनुसंधान एक व्यवस्थित एवं सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम

तथा प्रभावी बनाया जाता है। चौदह वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान संवैधानिक प्रावधान में से एक है। पिछले एक दशक में भारत ने साक्षरता की दर में उल्लेखनीय प्रगति की और हाल ही में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन इसमें महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। बुद्धि के विभिन्न प्रकार (शाब्दिक, तार्किक आदि) के बारे में गार्नर के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया है। यह भाग बताता है कि प्रत्येक व्यक्ति की सीखने की शैली, शिक्षा में इसके उपयोग के साथ स्कूल में बहु–प्रतिभा सिद्धान्त अपनाने के अनेक लाभ है।

12. सुझाव

- विद्यालयों में छात्रों के संपूर्ण शैक्षणिक विकास के लिए स्वास्थ्य एवं उत्साहपूर्वक वातावरण निर्मित किया जाए।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यालयों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास हेतु भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने हेतु बालसभा का आयोजन किया जाना चाहिए।

13. सन्दर्भ ग्रंथ

1. आर्येन्दु, अखिलेश – सोशल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001.
2. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
3. चौबे, एस.पी. – हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2ए 2003.
4. झा, शीतला एवं दुबे शैलजा – मध्याह्न भोजन कार्यक्रम व स्व सहायता समूह के कार्य निष्पादन पर शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन, Research Expo International Multidisciplinary Research Journal, 2016; Vol. VI, Issue – I, pp.59-64.
5. सिंह, शिव प्रकाश – भारत में 'सभी के लिये शिक्षा' अभियानः मिथक या वास्तविकता, प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक महेन्द्र जैन, 2007; आगरा, पृ0 1878. 1879।
6. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7.9.
7. शिक्षा – विकासपीडिया